विद्यार्थी जीवन

- दे.सं.वि.वि. में विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास का समुचित ध्यान रखा जाता है
- विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का चरम लक्ष्य सिर्फ अपनी वित्तीय क्षमता को बढ़ाना नहीं है, अपितु खुद को एक सुसंस्कृत एवं जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करना है जो कि एक सौहार्द्रपूर्ण एवं समृद्ध समाज के निर्माण में सहयोग कर सके
- विद्यार्थी स्वस्थ, शालीन एवं सामान्य जीवनचर्या का पालन करते हैं जिसमें प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का समुचित समावेश होता है; योग, यज्ञ, सामूहिक प्रार्थना एवं ध्यान उनकी दिनचर्या के अभिन्न अंग हैं
- विद्यार्थियों ने योग एवं अन्य विषयों में राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार जीते हैं
- विश्वविद्यालय में सृजना विभाग के द्वारा 'सीखते-सीखते कमाओ' (अर्न व्हाइल लर्न) योजना चलाई जाती है जिसके अंतर्गत विद्यार्थी अपनी रचनात्मक क्षमताओं का विकास करने के साथ-साथ रोजमर्रा के खर्च हेतु धन उपार्जन भी कर सकते हैं
- सांस्कृतिक प्रकोष्ठ, विद्यार्थी उत्थान प्रकोष्ठ, प्रशिक्षण प्रकोष्ठ, आजीविका उपार्जन नियोजन प्रकोष्ठ, आदि विद्यार्थियों के सामाजिक एवं व्यावसायिक विकास हेतु अतिरिक्त सहयोग प्रदान करते हैं
- स्वास्थ्य संबंधी उपकरणों से सुसज्जित पॉलीक्लीनिक एवं डिस्पेंसरी के द्वारा सबके स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाता है

परिवीक्षा एवं समाज सेवा

- परिवीक्षा परियोजना दे.सं.वि.वि. में दी जाने वाली शिक्षा का एक अनूठा पहलू है जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को दो माह के लिए देश के विभिन्न भागों में समाज सेवा हेतु भेजा जाता है जिसमें वे उस क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य, शिक्षा, प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियाँ, आदि के बारे में बहुमूल्य जानकारी देते हैं
- दे.सं.वि.वि. भारतीय सेना एवं पुलिस के जवानों के लिए 'योग एवं जीवन प्रबंधन' शिविरों का आयोजन करता है - अभी तक 50,000 से अधिक जवान इन शिविरों के द्वारा प्रशिक्षित किए जा चुके हैं
- दे.सं.वि.वि. 'स्व-रोजगार एवं ग्राम्य विकास' विषय पर 45 दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाता है एवं इसके प्रतिभागियों को अनिवार्य रूप से भारत के विभिन्न गाँवों में 3 महीने की परिवीक्षा हेतु भेजा जाता है
- 'डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन' (दिया) दे.सं.वि.वि. द्वारा चलाया जाने वाला एक युवा आंदोलन है जिसके अंतर्गत देश एवं विदेश के लाखों युवाओं को आदर्श जीवन जीने एवं समग्र विकास हेतु साधना पथ के अवलम्बन हेतु प्रेरित किया जा रहा है - अनेकों युवा, जिनमें उद्योगपति, प्रबंधन विशेषज्ञ, अभियंता एवं चिकित्सक भी शामिल हैं, समाज सेवा को भी एक सम्मानजनक जीवनयापन की विधा के रूप में देखने लगे हैं जिसमें आत्म-संतोष, सामाजिक सम्मान एवं दिव्य अनुदान एक साथ पाए जा सकते हैं

अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध

दे.सं.वि.वि. ने विदेश के ऐसे कई संस्थानों के साथ शैक्षणिक अनुबंध (एम.ओ.यू.) स्थापित किए हैं जहाँ हमारी ही तरह शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं समग्र चारित्रिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस अनुबंध से दोनों पक्षों के मध्य वैचारिक, शैक्षणिक एवं शोधपरक ज्ञान के आदान-प्रदान का अनूठा संयोग बना हैं।

ऐसे कुछ विदेशी संस्थानों की सूची निम्नलिखित है -

- इंटरनैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वेदिक स्टडीज़, बर्लिन, जर्मनी
- युझनी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, क्रास्नोदार, रूस
- इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर एण्ड जेनेटिक्स, क्रास्नोदार, रूस
- मैमोनिडस विश्वविद्यालय, ब्यूनस आयर्स, अर्जेन्टीना
- जिआंग्जी विश्वविद्यालय ऑफ ट्रैडिशनल चाइनीज़ मेडिसिन, नानचांग, चीन
- एकैडमी ऑफ ट्रैडिशनल इंडियन साइंसेज़, सेन्ट्रो स्टडी भक्तिवेदान्त, पीसा, इटली
- हिन्दू धर्म विश्वविद्यालय, बाली, इंडोनेशिया
- इंटरनैशनल सेंटर फॉर कल्चरल स्टडीज़, वेस्ट चेस्टर, यू.एस.ए.
- वाइडर एसोसिएशन फॉर वेदिक स्टडीज़, यू.एस.ए.

www.dsvv.ac.in

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विश्व के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनरुत्थान हेतु एक अभिनव स्थापना

शोधकार्य

- प्राचीन वेदिक ज्ञान पर आधारित वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की विभिन्न विधाओं पर शोधकार्य किया जाता है - जैसे योग, आयुर्वेद, यज्ञ, मंत्र, मनोविज्ञान, ब्रह्माण्ड विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, आदि
- लगभग 200 विद्यार्थी अभी तक विभिन्न विभागों में पी-एच.डी. में दाखिला ले चुके हैं, एवं इनमें से करीब 140 से ज्यादा को पी-एच.डी. डिग्री दी जा चुकी है
- इंटीग्रेटिंग स्पिरिचुएलिटी एण्ड ऑर्गेनाइज़ेशनल लीडरशिप रिसर्च फाउंडेशन (ISOLRF), के साथ साझेदारी (एम.ओ.यू.) में विश्वविद्यालय में भारतीय प्रबंधन तंत्र के वेदिक आधार पर शोध कार्य हेतु पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य ISOL शोध केन्द्र की स्थापना की गई है
- वर्ष में दो बार देव संस्कृति इंटरडिसिप्लिनेरी इंटरनैशनल जर्नल (DSIIJ) प्रकाशित किया जाता है जिसमें वैज्ञानिक अध्यात्मवाद एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान पर आधारित देश-विदेश के शोध पत्र प्रकाशित होते हैं
- विश्वविद्यालय का अधिकतर शोध कार्य ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के साथ मिलकर होता है जिसकी स्थापना आचार्यश्री द्वारा 1979 में वैज्ञानिक आध्यात्मवाद पर शोध करने हेतु की गई थी

राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

दे.सं.वि.वि. नियमित रूप से विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन करता है। अभी हाल के कुछ सम्मेलनों की सूची निम्नलिखित है -

- इंटरनैशनल फेस्टिवल ऑफ योग, कल्चर एवं स्पिरिचुएलिटी (योग, संस्कृति एवं अध्यात्म का अंतर्राष्ट्रीय पर्व), प्रति वर्ष सन 2010 से (www.yogculturefestival.com)
- 'नरिशिंग द बैलेंस ऑफ द यूनिवर्स' विषय पर चौथी इंटरनैशनल कॉन्फ्रेंस एवं गैदरिंग ऑफ एल्डर्स, इंटरनैशनल कॉउंसिल फॉर कल्चरल स्टडीज़ के साथ मिलकर मार्च 2012 में आयोजित की गई - इसमें 33 देशों के 250 से अधिक लोगों ने भागीदारी करी
- फरवरी 2012 में 'योग, आयुर्वेद एवं वेदिक संस्कृति' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई
- मार्च 2012 में वर्ल्ड एसोसिएशन फॉर वेदिक स्टडीज़ के साथ मिलकर 'वेद एवं विचार क्रांति' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया
- मार्च 2011 में 'इन्डिजनस टेक्नीक्स इन साइकोथेरेपी' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया
- अगस्त 2011 में 'वेदिक अध्ययन एवं सूचना प्रौद्योगिकी' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया

सम्मान / मान्यता

- दे.सं.वि.वि. को इंटरनैशनल कॉउंसिल ऑफ प्रोफेशनल थेरेपिस्टस् (आई.सी.पी.टी.), लन्दन के माननीय सदस्य के रूप में स्वीकार किया गया है
- वर्ल्ड-वाइड एक्रेडिटेशन ऑफ योग ऑर्गेनाइज़ेशन्स् ने दे.सं.वि.वि. को उन पाँच संस्थानों में चयनित किया है जो अमरीका एवं भारत में स्थित अन्य योग संस्थानों का सर्वेक्षण करेंगे
- मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (www.yogamdniy.nic.in) के अंतर्गत आने वाले जिला योग स्वास्थ्य केन्द्रों के सर्वेक्षण हेतु दे.सं.वि.वि. को नोडल योग संस्थान के रूप में चयनित किया गया है

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

गायत्रीकुञ्ज - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-209411, उत्तराखण्ड

फोन : (01334) 261367, 261485

फैक्स : (01334) 260723, 260866

ई-मेल : info@dsvv.ac.in • वेबसाइट : www.dsvv.ac.in

ऐसा एक विश्वविद्यालय देश में होना ही चाहिए जो सच्चे मनुष्य, बड़े मनुष्य, महान मनुष्य, सर्वांगपूर्ण मनुष्य बनाने की आवश्यकता पूर्ण कर सके।

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

देव संस्कृति विश्वविद्यालय एक विशिष्ट शैक्षणिक संस्थान एवं ज्ञान का आलोक केन्द्र है जिसका मुख्य लक्ष्य है - मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण। इसका निर्माण जाने-माने संत-विद्वान-दार्शनिक एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ युगऋषि पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (1911-1990) की एक दिव्य योजना के अंतर्गत हुआ है। यहाँ विद्यार्थियों में सन्निहित निःस्वार्थता, दया, करुणा, उदारता, आदि दिव्य गुणों को जाग्रत कर के उन्हें विश्व मानवता हेतु समर्पित एक समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार एवं बहादुर नागरिक बनाया जाता है। गंगा की गोद, हिमालय की छाया में 86 एकड़ हरियाली से परिपूर्ण क्षेत्र में फैला हुआ यह विश्वविद्यालय, आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत है एवं विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है।

लक्ष्य - मिशन

- परम्परागत शिक्षा का अध्यात्म व विज्ञान के साथ समन्वय
- नैष्ठिक, समर्पित एवं निष्णात विद्यार्थियों का निर्माण
- वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का जीवनशैली में समावेश
- राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत आदर्श एवं नैष्ठिक नागरिक तैयार करना
- भावी नेतृत्व को दिशा देते हुए उनमें आत्मीयता एवं मानवता का भाव विकसित करना

उद्देश्य - दूरदर्शी योजना

''ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व तैयार करना जो दृढ़ चरित्र, संकल्प, शौर्य, संवेदनशीलता एवं सक्षमता के धनी हों, जीवन के हर क्षेत्र में उत्कृष्टता अर्जित करें, एवं, अपने सद्बुद्धियुक्त विवेक के द्वारा स्वयं एवं समाज के लिए समग्र प्रगति के अनुपम अवसर उत्पन्न करें।''

हमारे बारे में

- मातृसंस्था शान्तिकुञ्ज (अखिल विश्व गायत्री परिवार का मुख्यालय) के संरक्षण में 1999 में विश्वविद्यालय का भूमि पूजन किया गया
- उत्तराखण्ड सरकार के सरकारी गजट की सूचना संख्या (123/विधाई एवं संसदीय कार्य/2002 दिनाँक 11-04-2002) के अंतर्गत 2002 में विश्वविद्यालय को 'देव संस्कृति विश्वविद्यालय' का स्वरूप प्रदान किया गया
- दे.सं.वि.वि. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) के ऐक्ट 1956 सेक्शन 2 (एफ) के अंतर्गत मान्यता प्राप्त है

लक्ष्य एवं उद्देश्य

- देव संस्कृति का शिक्षण एवं प्रसार।
- देव संस्कृति के ज्ञान की धाराएँ - धर्म , दर्शन, संस्कृति आदि पर आधारित पाठ्यक्रमों का शिक्षण एवं इनके समसामयिक बिन्दुओं पर शोध।
- देव संस्कृति पर आधारित विज्ञान की धाराओं ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्र विज्ञान, योग विज्ञान, मनोविज्ञान आदि पर शिक्षण एवं इनके समसामयिक विन्दुओं पर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शोध।
- नवीन सामाजिक संरचना के लिए आवश्यक रोजगार परक पाठ्यक्रमों का शिक्षण, आपदा प्रबन्धन, ग्राम प्रबन्धन आदि पर अध्यापन एवं शोध।
- पूर्णतया आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में गुरुकुल परम्परा की पुनर्स्थापना।

शैक्षणिक कार्यक्रम

- मनोविज्ञान विभाग (पी-एच.डी., परास्नातक, स्नातक)
- योग एवं मानव स्वास्थ्य विभाग
  - मानव चेतना एवं योग विज्ञान केन्द्र
  - समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन केन्द्र
  - पॉलीक्लिनिक केन्द्र

  (पी-एच.डी., परास्नातक, स्नातक, पी.जी.डिप्लोमा, सर्टीफिकेट)
- शिक्षा विभाग (पी-एच.डी., परास्नातक, स्नातक)
- कम्प्यूटर साइंस विभाग
  - कम्प्यूटर साइंस केन्द्र
  - कम्प्यूटर एप्लीकेशन केन्द्र
  - गणित अध्ययन केन्द

  (पी-एच.डी., परास्नातक, स्नातक)
- संचार विभाग
  - पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र
  - एनीमेशन केन्द्र

  (पी-एच.डी., परास्नातक, स्नातक, पी.जी.डिप्लोमा, डिप्लोमा)
- भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबन्धन विभाग
  - प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति केन्द्र
  - पर्यटन प्रबन्धन केन्द

  (पी-एच.डी., परास्नातक, स्नातक)
- भाषा विभाग
  - संस्कृत अध्ययन केन्द्र
  - हिन्दी अध्ययन केन्द्र
  - अंग्रेजी अध्ययन केन्द्र

  (पी-एच.डी., परास्नातक, स्नातक)
- ग्राम प्रबन्धन विभाग (डिप्लोमा)
- प्राच्य अध्ययन विभाग
  - वैज्ञानिक अध्यात्मवाद केन्द्र
  - धर्म विज्ञान केन्द्र
  - जीवन प्रबन्धन केन्द्र

  (सर्टीफिकेट)
- पर्यावरण विज्ञान विभाग (पी-एच.डी., परास्नातक, स्नातक)

दे.सं.वि.वि. की विशेषताएँ

आज के युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का जितना अधिक एकांगी विकास हुआ है उतना ही मानव व्यक्तित्व निकृष्टता की ओर अग्रसर हुआ है। सांस्कृतिक एवं मानव मूल्यों के ह्रास की कीमत पर वित्तीय विकास का परचम लहराया गया है। किन्तु अब मानव ने समझ लिया है कि समग्र विकास सांस्कृतिक एवं मानव मूल्यों की स्थापना से ही सम्भव है। इन्हीं मूल्यों की पुनर्स्थापना हेतु दे.सं.वि.वि. में निम्नलिखित सुविधाएँ एवं कार्यक्रम उपलब्ध हैं:

- हर सत्र के प्रारम्भ में विद्यार्थियों की विधिवत् दीक्षा, 'ज्ञान दीक्षा समारोह' के द्वारा
- शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का अनुपात 1:8 जो कि आज के समय में अति दुर्लभ है
- माननीय कुलाधिपति, आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या की गीता एवं ध्यान की कक्षाओं में जीवन प्रबन्धन के विशिष्ट सूत्र सीखने का अतुलनीय अवसर
- स्वावलम्बन-परक पाठ्यक्रमों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है
- शोधकार्य एवं आजीविका उपार्जन हेतु मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण
- पुस्तकालय में 37,000 से अधिक पुस्तकें एवं शोध-जर्नल
- व्यक्तित्व परिष्कार, व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं सामाजिक विकास हेतु तीन-सूत्रीय परिवीक्षा का अनिवार्य क्रम
- अभी तक विद्यार्थियों की 1,000 से अधिक टोलियों ने परिवीक्षा के माध्यम से राष्ट्र के विभिन्न भागों के युवाओं में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने में अहम भूमिका निभाई है
- देव संस्कृति इंटरडिसिप्लिनेरी इंटरनेशनल जर्नल (DSIIJ) का प्रकाशन जिसमें वैज्ञानिक अध्यात्मवाद एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान पर आधारित देश-विदेश के शोध पत्र प्रकाशित होते हैं
- पिछले एक दशक में राष्ट्र के हजारों व्यक्तियों को कचरा प्रबन्धन, रद्दी कागज का पुनः उपयोग, खादी बनाना, गौ-मूत्र एवं गोबर के उत्पाद बनाना, आदि का प्रशिक्षण दिया जा चुका है
- दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से पिछले 5 वर्ष में 8,000 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं
- प्राचीन भारतीय (वैकल्पिक) चिकित्सा पद्धतियों द्वारा यहाँ रोगों का असरदार उपचार किया जा रहा है
- शिक्षक एवं कर्मचारीगण विश्वविद्यालय से न्यूनतम सहयोग लेते हुए विशुद्ध समयदानी भाव से अपनी सेवाएँ देते हैं
- नवीन उपकरणों से सुसज्जित विभिन्न प्रयोगशालाएँ यहाँ उपलब्ध हैं - कम्प्यूटर, नैदानिक मनोविज्ञान, प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों हेतु पॉलीक्लिनिक, खगोलीय अन्वेषण, औषधि वाटिका, आदि